|| ओ३म् ||

॥ दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट ॥

कार्य रूपरेखा

(Activity Profile)

(दिनांक 25/11/2011 से 25/06/2017 तक)

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट

कार्य विषयक सूचि

1. **दर्शन योग महाविद्यालय** (मुख्य शाखा), आर्यवन, रोजड (गुजरात) व दर्शन योग महाविद्यालय (द्वितीय शाखा), सुंदरपर, रोहतक (हरयाणा) **का संचालन**।
   उद्देश्य :(क) वेद, दर्शन, उपनिषद तथा ऋषिकृत वैदिक प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन-अध्यापन।
   (ख) समाज में वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार हेतु वैराग्यवान् योगाभ्यासी धर्माचार्यों का निर्माण करना।

2. **दर्शन योग साधना आश्रम**, कमोदा, कुरुक्षेत्र **का संचालन** करना।
   (योग साधना तथा योग अनुसंधान व प्रशिक्षण का आदर्श संस्थान।)

3. **वैदिक परिवार निर्माण** तथा **वेद प्रचार समिति की स्थापना** द्वारा व्यवस्थित रूप में वैदिक-विचार धारा को व्यवहारिक रूप देना।

4. **वैदिक ध्यान व योग प्रशिक्षण यथा सघन साधना शिविर** आदि कार्यक्रमों का संचालन करना।

5. भारत के विभिन्न प्रान्तों में विशुद्ध वैदिक योग व वेद, दर्शन, उपनिषद आदि **वैदिक ग्रंथों का अध्यापन** व इनसे संबन्धित **प्रवचनमाला** तथा आगंतुक महानुभावों का मार्गदर्शन, जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान करना।

6. लौकिक-पारलौकिक कार्यों में सफलता हेतु **सफलता विज्ञान** परियोजना का संचालन करना। (सुविचार, पुस्तक, वीडियो, चित्र, शिविर, मंच आदि द्वारा प्रस्तुति)

7. विशुद्ध वैदिक ध्यान योग से संबन्धित साहित्य का लेखन, प्रकाशन एवं प्रचार-प्रसार हेतु **निःशुल्क साहित्य वितरण** करना।

8. वैदिक विद्या के प्रचार-प्रसार में समर्पित **विद्वानों को आर्थिक सहयोग** तथा निवास आदि के रूप में सुरक्षा प्रदान करना।

9. वैदिक **संस्कार-दीक्षा** का आयोजन करना। (संन्यास, वानप्रस्थ, उपनयन, वेदारम्भ दीक्षा का आयोजन)

10. अन्य गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे ब्रह्मचारियों तथा **विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग** करना।

11. **गौ-वंश संवर्धन** हेतु प्रचार तथा धन आदि का सहयोग करना।

12. निर्धन विकलांग रोगियों की **आर्थिक सहायता** करना।

13. पर्यावरण शुद्धि निमित्त
    1) वैज्ञानिक स्तर पर **यज्ञ-हवन** का क्रियान्वयन करना, अन्यों को प्रशिक्षण देना तथा यज्ञ हेतु घृत, समिधा एवं हवन सामग्री का सहयोग करना।
    2) औषधि व वनस्पति **वृक्षारोपण** करना तथा अन्यों को प्रेरित करना।

14. वैदिक **अंत्येष्टि संस्कार** करना तथा उसमें प्रयुक्त सामग्री का सहयोग करना।

15. देश के विभिन्न प्रान्तों में **प्राकृतिक प्रकोप** यथा बाढ़ आदि से पीड़ितों **की सहायता** करना।

16. इन्टरनेट व वेबसाइट के माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रेरणा तथा आध्यात्मिक व व्यावहारिक **शंकाओं का समाधान** करना।

1.	**दर्शन योग महाविद्यालय का संचालन** (वैदिक दर्शन अध्यापन एवं ध्यान योग प्रशिक्षण का आदर्श संस्थान) ● **दर्शन योग महाविद्यालय** (मुख्य शाखा), आर्यवन, रोजड (गुजरात) ● **दर्शन योग महाविद्यालय** (द्वितीय शाखा), सुंदरपर, रोहतक (हरयाणा)

- **उद्देश्य-** (वैराग्यवान् , योगाभ्यासी, धर्माचार्यों का निर्माण करना)

१) महर्षि पतञ्जलि प्रणीत अष्टाङ्गयोग की पद्धति से उच्च स्तर के योग-प्रशिक्षक तैय्यार करना, जो देश-विदेश में प्रचलित मिथ्या योग के स्थान पर सत्य योग का प्रशिक्षण दे सकें ।

२) विशिष्ट योग्यता वाले वैदिक-दार्शनिक विद्वानों का निर्माण करना, जो सार्वभौमिक युक्तियुक्त, अकाट्य, वैज्ञानिक, शाश्वत वैदिक सिद्धान्तों का बुद्धिजीवी वर्ग के समक्ष प्रभावपूर्ण शैली से प्रतिपादन करके उनकी नास्तिकता मिटाकर उन्हें आदर्श तथा नैतिकतायुक्त बना सकें ।

३) निष्काम भावना से युक्त मनसा, वाचा, कर्मणा एक होकर तन, मन, और धन से सम्पूर्ण जीवन की आहुति देने वाले व्यक्तियों का निर्माण करना, जो अपनी और संसार की अविद्या, अधर्म तथा दु:खों का विनाश करके उसके स्थान पर विद्या, धर्म तथा आनन्द की स्थापना कर सकें ।

॥ दर्शन योग महाविद्यालय, सुंदरपुर, रोहतक शाखा ॥

• दर्शन योग महाविद्यालय की विशेषताएँ -

१) प्रत्येक ब्रह्मचारी को पक्षपातरहित (समान रूप से) भोजन, वस्त्र, दूध –घी, फल, पुस्तक, आसन इत्यादि सभी वस्तुएँ निःशुल्क प्राप्त हैं।

२) प्रतिदिन कम से कम दो घण्टे व्यक्तिगत योगाभ्यास (ध्यान) करना अनिवार्य है।

३) प्रतिदिन क्रियात्मक योग प्रशिक्षण में विवेक, वैराग्य, अभ्यास, ईश्वर–प्रणिधान, मनोनियन्त्रण, ध्यान, समाधि तथा स्वस्वामि–सम्बन्ध (ममत्व) को हटाना, इत्यादि आध्यात्मिक सूक्ष्म विषयों पर विस्तार से विवेचन किया जाता है।

४) यम–नियमों का मनसा, वाचा, कर्मणा सूक्ष्मता से पालन कराया जाता है।

५) दिन में ५.३० घण्टे का मौन रहता है, (जिसमें ध्यान, स्वाध्याय आदि सम्मिलित हैं)।

६) रात्रि में आत्म–निरीक्षण होता है, (जिसमें दिन भर के दोषों का सब के समक्ष ज्ञापन तथा भविष्य में सुधार हेतु प्रयत्न किया जाता है)।

७) वार्तालाप का माध्यम संस्कृत भाषा है।

८) प्रतिदिन यज्ञ, वेदपाठ तथा वेदमन्त्र का स्वाध्याय होता है।

९) सप्ताह में एक बार आसन–प्रशिक्षण तथा समय समय पर व्याख्यान–प्रशिक्षण का भी अभ्यास कराया जाता है।

१०) दर्शनों की लिखित एवं मौखिक परीक्षाएँ ली जाती हैं।

११) प्रातःकाल ४ बजे से रात्रि ९–३० बजे तक आदर्श एवं व्यस्त गुरुकुलीय दिनचर्या है।

- दर्शन योग महाविद्यालय में दैनिक संध्या, यज्ञ, वेद-प्रवचन –

प्रातः सायं ध्यान (संध्या), दैनिक पर्यावरण शुद्धि का वैदिक उपाय = यज्ञ, वेद पाठ, वेद स्वाध्याय, वेद प्रवचन किया जाता है।

- विद्वानों का आगमन एवं प्रवचन –

देश–विदेश से विभिन्न विद्वानों का आगमन होता रहता है। उनका यथायोग्य सत्कार किया जाता है तथा उनके प्रवचनों का लाभ लिया जाता है।

2.	संचालन.... **दर्शन योग साधना आश्रम** कमोदा, कुरुक्षेत्र (योग साधना तथा योग अनुसंधान व प्रशिक्षण का आदर्श संस्थान)

अभ्युदय (लौकिक उपलब्धियाँ) और निःश्रेयस (मोक्ष) वैदिक भारतीय संस्कृति की विरासत है और इसको आत्मसात् किए बिना मानव जीवन की सफलता असम्भव है। अतः इसकी रक्षा और वृद्धि हम सबका एक अनिवार्य कर्त्तव्य बन जाता है।

इसी उद्देश्य से दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट, आर्यवन, रोजड, गुजरात की ओर से 'दर्शन योग साधना आश्रम' के नाम से एक नई और विशिष्ट योजना का शुभारम्भ दिनांक ३०/१०/२०१६ को गीता प्रादुर्भाव की पुण्यभूमि कुरुक्षेत्र, हरियाणा से किया गया है। वहाँ तीन बीघा भूमि है उसमें 4 साधना कुटिरों का निर्माण किया गया है। वर्तमान में उच्चस्तरीय साधना का अनुष्ठान आरम्भ हो गया है। अब तक इस पुनीत कार्य में लगभग 50 लाख रुपये राशि व्यय हो चुकी है। तथा दर्शन योग महाविद्यालय के आचार्य विद्वान आदि उच्चस्तरीय योग साधना कर रहें हैं।

हमारा प्रयास यह भी है कि यह लाभ सर्वसाधारण को भी मिले । अतः इसके लिए भिन्न-भिन्न स्थानों में भिन्न स्तरों पर साधना आश्रम का निर्माण करने की हमारी योजना है । जिसमें आयुष्मान पुरुषों, माताओं को ऐसा विशेष वातावरण-युक्त स्थान मिलेगा, जहाँ पर वे निश्चिन्त होकर पूरे मनोयोग से आजीवन या लम्बी साधना कर सकेंगे । इसके साथ नई पीढ़ी को भी विद्याप्राप्ति हेतु समुचित वातावरण उपलब्ध हो सकेगा । अन्य साधारण धार्मिक जनों के लिए भी निरन्तर कार्य होते रहेंगे ।

इस अभीष्ट लक्ष्य की सिद्धि के लिए सामूहिक साधना कक्ष, कार्यालय, पुस्तकालय, संग्रहालय, स्वागत कक्ष, भोजनालय, यज्ञशाला, अतिथिशाला, गौशाला, कर्मचारीगृह, साधक कुटिर, आचार्य निवास, नलकूप, कृषि यन्त्रालय, पुष्पवाटिका, औषधिवन आदि के लिए पर्याप्त स्थान और भवन की व्यवस्था की आवश्यकता है , जो परियोजना के अंतर्गत हैं ।

3. वैदिक परिवार निर्माण तथा वेद प्रचार समिति की स्थापना द्वारा व्यवस्थित रूप में वैदिक-विचार धारा को व्यवहारिक रूप देना ।

- **वेद-प्रचार समिति के उद्देश्य :-**
  - वैदिक जिज्ञासु से वैदिक श्रद्धालु, वैदिक प्रेरक, वैदिक प्रवक्ता आदि निर्माण कराते हुए वैदिक परिवार का निर्माण करना । पुनः वैदिक राष्ट्र का भव्य रूप देना ।
  - सुनियंत्रित व व्यवस्थित रूप से जन - जन तक वेद का संदेश पहुंचाना । योग्यता व रुचि अनुसार आवश्यक वैदिक दर्शन आदि साहित्य का अध्यापन करवाना ।
  - वैदिक योगविद्या के द्वारा ईश्वर साक्षात्कार करना तथा करवाना ।
  - जन साधारण तक वैदिक ज्ञान, योग विद्या, ईश्वरभक्ति, नैतिकता, मानवता, अनुशासन, राष्ट्रभक्ति, विश्वभ्रातृत्व आदि गुणों को स्थापित करना ।
- **वेद-प्रचार समिति की कार्यविधि :-**

१. उद्देश्यों को कार्यान्वित करने के लिए शिविर, कार्यशाला, वक्तृत्वादि प्रतियोगिता, प्रदर्शनी आदि का आयोजन करना ।

२. वैदिक योगविद्या पर क्रियात्मक अनुसंधान करना ।

३. प्रत्येक परिवार में वैदिक संस्कारों तथा पंच महायज्ञ का स्थापन करना ।

४. योजनाबद्ध रूप में **वैदिक परिवार**, वैदिक ग्राम निर्माण करते हुए वैदिक राष्ट्र निर्माण के लिए प्रयास करना।

५. **संस्कृत शिक्षा** के प्रचार-प्रसार के लिए शिविर, कार्यशाला, साहित्य प्रकाशन करना।

६. वैदिक संस्कृति के प्रचार के लिए वेदपाठी, वैदिक विद्वान, वेद-प्रचारक, वैदिक ग्रंथ रचयिता, वैदिक गवेषक आदि को पुरस्कृत व सम्मानित करना, आर्थिक अनुदान, वृत्ति तथा अन्य सहायता देना।

७. विभिन्न स्थानों में चल रहे साधनाश्रम, प्रचार केन्द्र, शिविर केन्द्र, गुरुकुल, योग महाविद्यालय की स्थापना में आर्थिक व शारीरिक सहयोग करना।

८. कार्यरत् समाज, संगठन, समिति, संस्थानों में वैदिक विद्या और योगविद्या की संवृद्धि व सुरक्षा देना।

९. वैदिक साधकों तथा वैदिक विद्वानों के लिए कार्यक्षेत्र उपलब्ध करवाना।

१०. धार्मिक व्यक्तियों के साथ सभी प्रकार से मिलकर संगठित रहना।

११. इच्छुक व्यक्तियों को योग्यतानुसार सेवा के अवसर उपलब्ध करवाना।

१२. अकाल, भूकम्प, बाढ़, अग्निकाण्ड, महामारी तथा इसी प्रकार की अन्य भौतिक आपदाओं की स्थिति में राहत कार्य करना तथा ऐसे राहत कार्यों में संलग्न संस्थाओं, संस्थानों अथवा व्यक्तियों को दान, चन्दा, अथवा अंशदान देना।

१३. पर्यावरण शुद्धि हेतु अग्निहोत्र के लिए उत्तम हवन सामग्री, समिधा, गाय का घी आदि का निर्माण तथा वितरण करवाना।

१४. शुद्ध सात्विक जैविक अन्न तथा भोज्य पदार्थ आदि का निर्माण तथा वितरण करवाना। पर्यावरण की शुद्धि, सुरक्षा एवं सन्तुलन हेतु यज्ञादि का आयोजन, सम्पादन तथा एतदर्थ समायोजकों को आर्थिक सहायता देना। आदि आदि ...।

4. वैदिक ध्यान व योग प्रशिक्षण यथा सघन साधना शिविर आदि का संचालन करना।

• सघन साधना शिविर-

दर्शन योग महाविद्यालय में १ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५ तक स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में एक वर्षीय **सघन साधना शिविर** का प्रारम्भ स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक एवं स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक के शुभाशीर्वचनों से हुआ तथा स्वामी आशुतोष जी परिव्राजक की शुभकामनायें भी प्राप्त हुईं। स्वामी सत्यपति जी की योग विद्या को उन्नत

बनाने की परंपरा को समृद्ध करने हेतु दर्शन योग महाविद्यालय के आचार्य स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती का यह एक अथक प्रयास था कि उन्होंने इस विशेष साधना व मौन शिविर का आयोजन किया। इस शिविर के माध्यम से बुद्धिपूर्वक अभ्यास करने वाले सुशिक्षित वैदिक योग साधक, समाज को प्रेरणा एवं नेतृत्त्व करने वाले योग प्रशिक्षक एवं आध्यात्मिक विद्या की रक्षा व वृद्धि में जीवन समर्पित करने वाले अध्येता तैयार हुए व होंगे ।
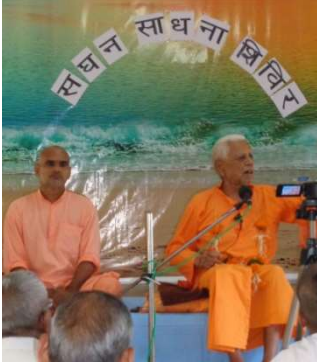
शिविर में विशेष रूप से वेद, दर्शन आदि आर्ष ग्रन्थों के आधार पर ध्यान, उपासना का प्रशिक्षण, विवेक – वैराग्य, समाधि की प्राप्ति हेतु निदिध्यासन आदि के रूप में उसकी वैज्ञानिक विधि एवं उपायों का परिज्ञान कराया गया । इसके साथ सूक्ष्म व उच्च आध्यात्मिक स्तर की वृद्धि हेतु सम्पूर्ण न्याय दर्शन का अध्यापन भी कराया गया। इस शिविर में मुख्य रूप से दर्शन योग महाविद्यालय के स्नातक, व्याकरण के विद्वान्, सुशिक्षित वर्ग तथा अन्य २७ सुयोग्य योगसाधक शिविरार्थियों की संख्या में भाग लिया , जिनमें १७ ब्रह्मचारी ०४ वानप्रस्थी ०२ संन्यासी तथा अन्य ०४ साधक – साधिकायें तथा इसके अतिरिक्त विद्यालय के ब्रह्मचारियों ने भी श्रद्धापूर्वक शिविर के अनुशासन का पालन करते हुए वैदिक योग विद्या का प्रशिक्षण लिया। अन्य ७ अंशकालीन शिविरार्थी व अन्य अतिथि महानुभाव भी शिविर में साधना का लाभ लेने हेतु आते रहे।

• योग प्रशिक्षण शिविर-

देश के अनेक प्रान्तों (मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा, राजस्थान आदि) में तथा आर्यवन परिसर में योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन होता है, – जिसमें दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट के मेनेजिंग ट्रस्टी, ट्रस्टी तथा विद्वान् अवैतनिक सेवाएं प्रदान करते हैं। जिस में हजारों साधक भाग लेकर लाभ उठाते हैं। उनमें से कई व्यक्ति प्रेरणा पाकर अपने – अपने क्षेत्रों में शिविरों का आयोजन व प्रचार करने में संलग्न हैं।

• किशोर चरित्र निर्माण शिविर-

वर्ष में एक बार ग्रीष्म अवकाश में यह शिविर आयोजित किया जाता है, जिसमें किशोरों को वैदिक धर्म, संस्कृति, सभ्यता, इतिहास, आत्मरक्षा आदि का परिज्ञान कराया जाता है।

5.	भारत के विभिन्न प्रान्तों में विशुद्ध वैदिक योग व वेद-दर्शन-उपनिषद आदि वैदिक ग्रंथों का अध्यापन व इन से संबन्धित प्रवचनमाला।

• मानसिक शान्ति, सद्भावना आदि की प्राप्ति के लिए विशुद्ध वैदिक ध्यान योग, वेद-दर्शन-उपनिषद आदि प्राचीन शास्त्रों से सम्बंधित प्रवचन/ प्रवचन माला -

देश भर के विभिन्न प्रान्तों में आध्यात्मिक व दार्शनिक विषयों पर पूज्य स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक, स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती, आ. दिनेशकुमार जी, आ. ईश्वरानन्द जी, आ. किशोर चन्द्र जी मादला आदि विद्वानों के प्रवचनों का आयोजन किया जाता है ; जिस के माध्यम से वैदिक संस्कृति, आध्यात्मिक सूक्ष्म सिद्धांतों, राष्ट्रीय भावना, विश्व शांति के उपाय, योग, ध्यान, यज्ञ, विभिन्न दुखों से बचने के उपाय, मानसिक विकारों जैसे तनाव, हताशा, निराशा, काम, क्रोध, लोभ, राग, द्वेष, शोक, मोह को दूर करने की विद्या आदि विषयों का प्रचार-प्रसार किया जाता है।

स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक के कार्यो का संक्षिप्त विवरण

भारत के विभिन्न प्रान्तों (लगभग १५) में विशुद्ध वैदिक योग व वेद-दर्शन-उपनिषद आदि वैदिक ग्रंथों का अध्यापन व इन से संबन्धित प्रवचनमाला तथा आगंतुक महानुभावों का मार्गदर्शन, जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान।

प्रचार कार्यक्रम का नाम	25-11-2011 से 31-3-2012	1-4-2012 से 31-3-2013	1-4-2013 से 31-3-2014	1-4-2014 से 31-3-2015	1-4-2015 से 31-03-2016	1-4-2016 से 25-06-2017	कुल कार्यक्रम
सरल अध्यात्मिक शिविर/ वैदिक ध्यान .. / आर्य महिला प्रशिक्षण --/ किशोर चरित्र निर्माण ../ व्यक्तित्व विकास ..शिविर आदि ,	7	29	23	27	23	24	133
वेद प्रवचन तथा शंका समाधान	54	160	128	65	54	86	547
न्याय दर्शन अध्यापन	1	6	7	9	9	28	60
योग दर्शन पाठ अध्यापन	1	17	31	12	2	2	98
सांख्य दर्शन पाठ अध्यापन	7	22	18	15	22	19	103
अन्य दर्शन और उअनिषद पाठ	0	2	4	8	8	4	26
मनुस्मृति की कक्षा	0	0	27	14	11	9	61
सत्यार्थ प्रकाश का पाठ	2	0	0	18	7	6	33
आर्याभिविनय पाठ	0	0	0	8	18	9	35

दि. 27/07/2012 से 29/7/2012

*२७-२९ = वैदिक प्रवचन, आर्य समाज हाथीख़ाना,राजकोट. संपर्क श्री रणजीत सिंह जी, मो. = ०९४२८२०२५९४

दि. 01/01/2012 से 03/1/2012= राष्ट्रीय विचार गोष्ठी. नागपुर, विषय- "क्या ईश्वर है या नहीं"

सरल आध्यात्मिक शिविर. स्थान : गुरुकुल लाढौत. जिला - रोहतक, हरयाणा. दि. 17/10/12 से 21/10/2012
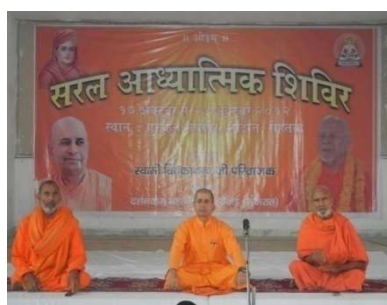
 	२५ से २८ अक्टूबर २०१२, ४ दिन तक आयोजित किये गए इस **आर्य महासम्मेलन** में मुझे एक अलग पंडाल शंका समाधान के लिए दिया गया - घंटे तक देश ११दिनों में मैंने कुल मिलाकर ४इन . विदेश से पधारे हुए आर्य प्रतिनिधियों की शंकाओं का समाधान कियाईश्वर की कृपा से . यह कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा और. सैंकड़ों लोगों को इस शंका समाधान के कार्यक्रम से संतोष प्राप्त हुआ.
२४ से २६ दिसम्बर २०१२ तक **सरल आध्यात्मिक शिविर** तथा वेद प्रचार कार्यक्रम	**ध्यान योग प्रशिक्षण शिविर**, आर्य वन, रोजड़, गुजरात में प्रवचन तथा शंका समाधान करते हुए । दिनांक-18 से 25 नवम्बर 2012
6/4/2014 रविवार को सूरत गुजरात में प्रवचन 	१० जनवरी २०१३ को इण्डिया फर्स्ट फाउण्डेशन स्कूल, करजत (निकट माथेरान, मुम्बई)
११-१३ जनवरी २०१३ 	**सरल आध्यात्मिक शिविर** , माथेरान, (मुंबई के पास.)
८ से १०-०२-२०१३ तक	८-१० = **सरल आध्यात्मिक शिविर**. स्थान : बालाजी निरोगधाम बख्तावरपुर, दिल्ली . संपर्क : श्री अशोक जी आर्य,
5.1.2014	**"गृहस्थ जीवन को सुखी कैसे बनाएँ"** इस विषय पर टाउन हाल

<table>
<tr><td></td><td>अहमदाबाद में 5.1.2014 को प्रवचन एवं शंका समाधान का अत्यंत रोचक एवं प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ ।
 </td></tr>
<tr><td>18.07.2014
</td><td>ईश्वर की वाणी = 'वेद कथा, शहीद वीर मंगल पाण्डे ऑडिटोरियम, निकोल, अहमदाबाद में सफलतापूर्वक सम्पन्न ।
 </td></tr>
<tr><td>२५ सितम्बर से १ अक्टूबर तक . कन्या गुरुकुल चोटीपुरा उत्तर प्रदेश में दर्शन शास्त्रो का अध्यापन करते हुए
</td><td>आर्य समाज पिम्परी पूना द्वारा संचालित जूनियर कालेज की छात्राओं को 26.9.2014 को शंका-समाधान पूर्वक ईश्वर, कर्म फल, पुनर्जन्म आदि विषयों का प्रस्थापन।
 </td></tr>
<tr><td>21-10-14
</td><td>अजमेर ऋषि उद्यान में 21, 22, 23 अक्टूबर 2014 को यज्ञ प्रवचन एवं शंका समाधान ।
 </td></tr>
<tr><td>2-11-2014
</td><td>गुरुकुल चोटीपुरा जिला अमरोहा उत्तर प्रदेश में कन्याओं को वैदिक धर्म, ईश्वर, कर्मफल, पुनर्जन्म आदि विषयों पर प्रवचन,शंका समाधान ।
</td></tr>
</table>

१६-११-२०१४	१६-११-२०१४ को टाउन हॉल अहमदाबाद में विशाल जन समुदाय में सन्तान निर्माण विषय पर प्रवचन एवं शंका समाधान का कार्यक्रम बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न।

स्वामी ब्रह्मविदानन्द जी सरस्वती के द्वारा अनेक महत्त्वपूर्ण आध्यात्मिक ग्रन्थों अध्यात्म सरोवर की रचना व 'बृहती ब्रह्ममेधा' ग्रन्थ का संपादन किया गया है । आपके वेद प्रवचन, संस्कृत, व्याकरण, दर्शन अध्यापन,ब्रह्मचारियों व आगंतुक महानुभावों को मार्गदर्शन, प्रेरणा आदि समाज कल्याणकारी कार्य हैं । वर्त्तमान में आप दो वर्ष के लिये विशेष मौन साधना के अनुष्ठान में हैं।

स्वामी श्री ध्रुवदेव जी अपनी विशेष आध्यात्मिक स्थिति का निर्माण करते हुए दर्शन अध्यापन, वेद प्रवचन,संस्कृत-व्याकरण अध्यापन, ब्रह्मचारियों व आगन्तुक महानुभावों को मार्गदर्शन व प्रेरणा करते हैं।

ब्र.दिनेशकुमार जी दर्शन पठन-पाठन के साथ –साथ वेद प्रवचन,विद्यालय की प्रबन्ध-व्यवस्था का संचालन वेद प्रचार,योग प्रशिक्षण, यज्ञ-प्रशिक्षण, अथिति सत्कार, ब्रह्मचारियों व आगन्तुक महानुभावों को मार्गदर्शन व प्रेरणा, प्रकाशन व वितरण विभाग से संबन्धित कार्य भी करते हैं।

ब्र. प्रियेश जी के द्वारा – दर्शन अध्यापन, वेद प्रवचन, विद्यालय की व्यवस्था, वेद प्रचार, अतिथि सत्कार, ब्रह्मचारियों को मार्गदर्शन, प्रेरणा, कार्य वितरण व व्यायाम प्रशिक्षण, प्रकाशन विभाग, वितरण विभाग, कम्प्यूटर विभाग का सञ्चालन आदि कार्य किया जाता है।

दर्शन योग परिवार के हमारे सदस्यों (स्वामी आशुतोष जी , आचार्य ईश्वरानन्द जी, आचार्य नवानन्द जी आदि) के द्वारा योग प्रशिक्षण , वेद प्रवचन , आध्यात्मिक सत्संग व शंका समाधान , संस्कृत व दर्शन-अध्यापन , तार्किक व प्रामाणिक आध्यात्मिक मार्गदर्शन आदि के द्वारा वैदिक संस्कृति का प्रचार किया जाता है।

आगन्तुक महानुभावों को मार्गदर्शन –

देश के अनेक प्रान्तों से जिज्ञासु आगन्तुकों का व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षणिक, राष्ट्रीय एवं विश्व स्तरीय क्षेत्रों में मार्गदर्शन, परामर्श आदि दिया जाता है।

जिज्ञासुओं की शंकाओं का समाधान –

वैदिक योग, दर्शन, एवं अध्यात्म सम्बन्धी शंकाओं का समाधान शिविरों, प्रवचनों, शंका-समाधान-कार्यक्रम के माध्यम से, पत्राचार से और व्यक्तिगत मिलकर भी किया जाता है।

4.	लौकिक-पारलौकिक कार्यों में सफलता हेतु सफलता विज्ञान परियोजना का संचालन करना। (सुविचार, पुस्तक, वीडियो, चित्र, शिविर, मंच आदि द्वारा प्रस्तुति)

7. विशुद्ध वैदिक ध्यान योग से संबन्धित साहित्य का लेखन, प्रकाशन एवं प्रचार प्रसार हेतु निःशुल्क वितरण।

बृहती ब्रह्ममेधा - इसमें पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज के अब तक के जीवन का आध्यात्मिक अद्भुत ज्ञान विज्ञान प्रस्तुत किया गया है। मुख्यतः 2003 में सम्पन्न तीन मास के एक उच्चस्तरीय

साधना योग शिविर में उनके द्वारा जो अपने विस्तृत आध्यात्मिक अनुभव प्रस्तुत किये गये उनको आचार्य सुमेरु प्रसाद जी के द्वारा संकलित कर अक्षरशः संपादित किया गया है।
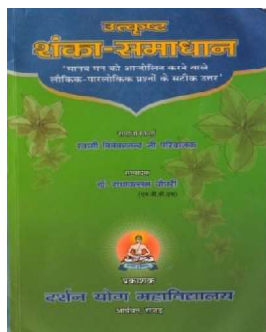
उत्कृष्ट शंका समाधान – आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक दार्शनिक विद्वान स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक द्वारा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण शिविरों में जो शंका समाधान किया जाता था. उनमें से कई शंकाओं का संग्रह डॉ. राधाबल्लभ जी चौधरी द्वारा इस पुस्तक में किया गया है. इस पुस्तक का वितरण भी देश-विदेश के लगभग ३२०० विशिष्ट महानुभावों, साधकों, विद्वानों आदि में किया गया है।

क्रोध को कैसे दूर करे ... क्रोध को दूर करने के उपाय तथा सत्य बोलने से लाभ,झूठ बोलने से हानियाँ।

इस नाम की पुस्तिका स्वामी विवेकानंद जी परिव्राजक द्वारा रचित है. यह लगभग १३,००० की संख्या में छपवाई गई है. इसका वितरण हजारों में किया गया है।

सत्योपदेश भाग – 1&2 स्वामी सत्यपति जी द्वारा दिये गए व्यावहारिक,सामाजिक व विशेषकर ईश्वर प्राप्ति संबन्धित आध्यात्मिक विषयों पर दिये गए उपदेशों का संग्रह।
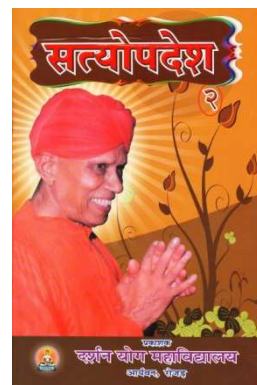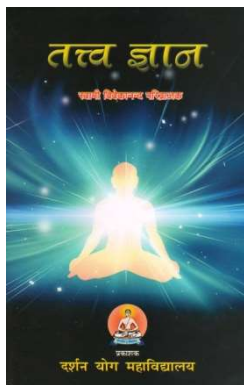
तत्त्व-ज्ञान- प्रस्तुत पुस्तक में ईश्वर और आत्मा इन दो पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को न्याय दर्शन की पंचावयव पद्धति से समझाने का प्रयास किया गया है । आर्य समाज के द्वितीय नियम को आधार बनाकर ईश्वर के गुणों की सिद्धि पंचावयवों से की गई है तथा अनेकत्र इन विषयों से सम्बन्धित भ्रान्त मान्यताओं का भी निवारण किया गया है। इन पदार्थों के यथार्थ स्वरूप को जानकर ही मनुष्य सम्पूर्ण दुःखों से छूटकर पूर्ण तथा स्थाई सुख को प्राप्त कर सकता है।

दुःख कारण और निवारण- दुःख क्यों उत्पन्न होता है, उसका मूल कारण व उस दुःख को दूर करने का उपाय । तत्त्वज्ञान के बारे में जो भ्रमित विचार है, उसे दूर करने का उपाय बताया गया है
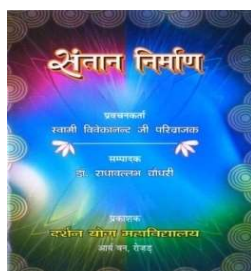
संतान निर्माण - लड़का यदि दुष्ट व्यसन में पड़ जाये तो उसे कैसे सुधारा जा सकता है ? बच्चों के निर्माण का विज्ञान क्या है? कब-कब कैसे शिक्षा देना चाहिए ? आदि विषयक स्पष्टीकरण ।
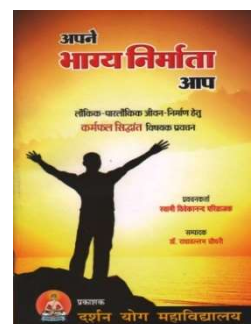
अपने भाग्य निर्माता आप- लौकिक व पारलौकिक उन्नति हेतु कर्मफल सिद्धान्त विषयक विज्ञान ।
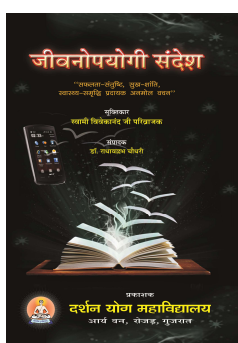
जीवनोपयोगी संदेश- व्यावहारिक, सामाजिक व आध्यात्मिक उन्नति के लिए अनमोल वचन ।
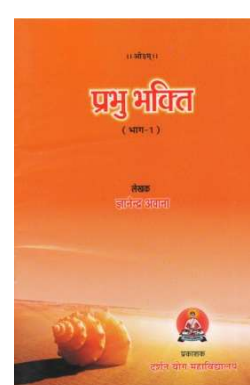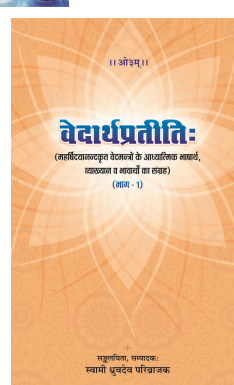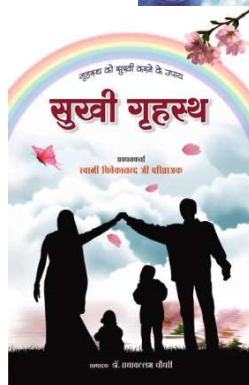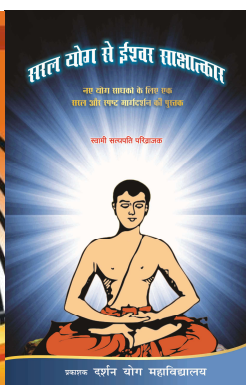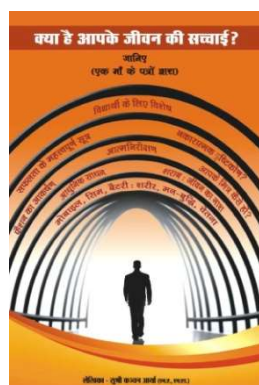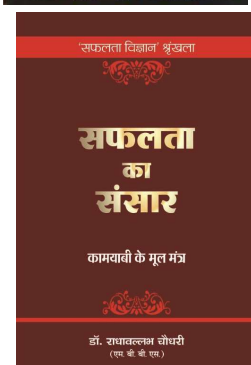
(अनेक प्रकाशित पुस्तकों से यह कुछ नवीन प्रकाशित पुस्तकें)

8. वैदिक विद्या के प्रचार प्रसार में समर्पित विद्वानों को सहयोग- सम्मान- सुरक्षा ।

- विद्वानों का सहयोग -

अनेक वैदिक विद्वानों को आर्थिक रूप तथा साहित्यादि से सहयोग व सम्मानित किया जाता है. अब तक लगभग 5,19,000/- की राशि का सहयोग दिया गया है.
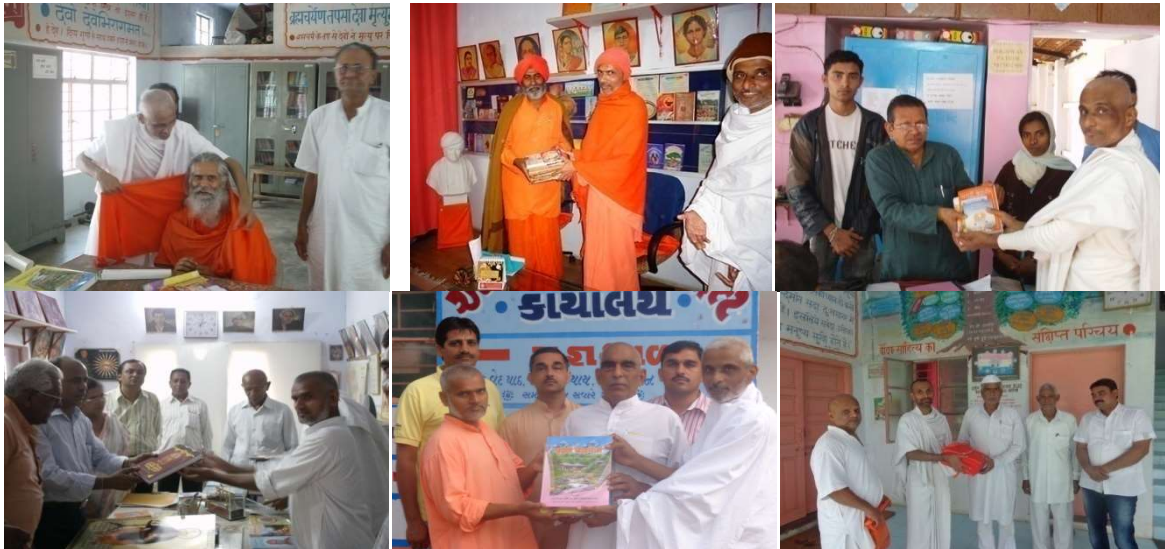
9. वैदिक संस्कार दीक्षा का आयोजन (संन्यास, वानप्रस्थ, उपनयन, वेदारम्भ दीक्षा का आयोजन)

10.	अन्य गुरुकुलों में अध्ययन कर रहे ब्रह्मचारियों तथा विद्यार्थियों को आर्थिक सहयोग।

- ब्रह्मचारियों तथा विद्यार्थियों को सहयोग -

अनेक वैदिक ब्रह्मचारियों तथा विद्यार्थियों को आर्थिक रूप तथा साहित्यादि से सहयोग व सम्मानित किया जाता है. अब तक लगभग 3,00,000/- की राशि सहयोग दिया गया है.

11.	गौ वंश संवर्धन हेतु प्रचार तथा धन आदि का सहयोग।

गौ शाला में विद्यालय परिवार द्वारा आर्थिक सहयोग दिया गया है व गायों को गुड आदि खिलाया गया है. अब तक लगभग 1,27,000/- की राशि सहयोग दिया गया है.

12.	निर्धन विकलांग रोगियों की आर्थिक सहायता।

अनेक निर्धनों, विकलांगों, रोगियों को आर्थिक व विभिन्न आवश्यक वस्तुओं द्वारा सहायता प्रदान की गई. अब तक लगभग 2,35,800/- रुपये की सहायता की गई है.

13.	पर्यावरण शुद्धि निमित्त

वैज्ञानिक स्तर पर यज्ञ-हवन का क्रियान्वयन करना, अन्यों को प्रशिक्षण देना तथा यज्ञ हेतु घृत, समिधा एवं हवन सामग्री का सहयोग करना।

- यज्ञ प्रशिक्षण शिविर- -

देश के अनेक राज्यों में धर्मप्रेमी जनता को यज्ञाभिमुख करने के लिए एक साथ २५०/३०० धार्मिक परिवारों को किसी स्थान पर निमन्त्रित करके उन्हें यज्ञ के महत्त्व, लाभ, प्रभाव, परिणाम को समझाया जाता है । यज्ञ–मन्त्रों का शुद्ध उच्चारण सिखाकर यज्ञ विषयक उनकी शंकाओं का समाधान किया जाता है। उन्हें यज्ञ कर्म को नियमित करने के लिए व्रत धारण कराया जाता है।

इसके बहुत ही उत्तम परिणाम सामने आए हैं। उन्हें सैद्धान्तिक परिज्ञान प्रदान किया जाता है और क्रियात्मक अनुष्ठान सिखाया जाता है। परिणामतः अनेक परिवारों ने नियमित यज्ञ करना आरम्भ कर दिया है।

- औषधि व वनस्पति वृक्षारोपण करना तथा अन्यों को प्रेरित करना।

अब तक लगभग 8,51,500/- की राशि यज्ञ तथा औषधि व वनस्पति वृक्षारोपण के लिए व्यय की गयी है ।

14.	वैदिक अंत्येष्टि संस्कार करना तथा उसमें प्रयुक्त सामग्री का सहयोग।

- अंत्येष्टि संस्कार –

ट्रस्ट की ओर से आस-पास के अनेक मृत जनों का वैदिक रीति से नि:शुल्क अन्त्येष्टि संस्कार किया गया है. गरीब जनों को घी, सामग्री आदि नि:शुल्क दी जाती है.

15.	देश के विभिन्न प्रान्तों में प्राकृतिक प्रकोप यथा बाढ़ सहायता।

उड़ीसा तथा मध्य प्रदेश में बाढ़ सहायता हेतु अब तक लगभग 20,000/- की राशि का सहयोग दिया गया है.

16.	इन्टरनेट व वेबसाइट के माध्यम से विभिन्न प्रकार से प्रेरणा तथा आध्यात्मिक व व्यावहारिक शंकाओं का समाधान।

Email- darshanyog@gmail.com

Web- darshanyog.org

Skype/Facebook/ Youtube – darshanyog

vimeo.com/darshanyog

www.thearyasamaj.org/darshanyog

www.slideshare.net/darshanyogmahavi.

તરીકે ઉજવવાનો ઉપક્રમ હાથ ધર્યો છે, તે સંદર્ભમાં ગુજરાતના ગામો અને શહેરોમાં કાર્યરત થઇ ગયેલા વિવેકાનંદ યુવા કેન્દ્રો માટે ૪૧,૦૦૦ જેટલા

બેકારી ગુજરાતમાં છે અને આ ગૌરવભરી પરિસ્થિતિનું નિર્માણ એટલા માટે થયું છે કે, ગુજરાતે દશ વર્ષ સુધી વિકાસની નવી ચાઇ પાર કરી છે. જો વિકાસ

યુવાનોને માટે નું એ પ્રેન્ટીસ સરકારે આપ સરકારે રાજ પરિવહન ઉપર

ગુજરાત સ ઘોડાસરા એ અગ્નિપથના દર્શનયોગ મહા દળદાર ગ્રંથોનો

આર્યજગતના સ્વામી સત્યપતિજી વિશેષ યોગાભ્યાસ શિ શિબિર દરમ્યાન વર્તમા સુમેરુપ્રસાદજી દ્વારા સ્વા કરવામાં આવ્યું હતું. આ પ્રાપ્ત કેવી રીતે કરવી જોઇએ પોતાના ૫૦ વર્ષોના યોગાભ્ય ...વાના આધારે સ્વામી સત્યપતિજી દ્વારા આપવામ... આવ્યું છે. યોગાભ્યાસ તથા અધ્યાત્મના ક્ષેત્રમાં આગળ વધવા ઇચ્છતા ધર્મપ્રેમી મહાનુભાવો માટે આ પુસ્તક અત્યંત લાભકારી છે.

આધ્યાત્મિક રૂચિ ધરાવતા શ્રી ઘોડાસરાએ જણાવ્યું હતું કે હવે તો રાજકારણમાંથી નિવૃત્તિ લઇ જીવનનો બાકીનો સમય અધ્યાત્મ વિદ્યા પ્રાપ્ત કરી આત્મિક ઉન્નતિ માટે ગાળવાની મારી તીવ્ર ઇચ્છા છે.

વૈદિક મહાસભા દ્વારા જૂનાગઢ ખાતે એક દિવસીય શિબિર સફળતાપૂર્વક સંપન્ન

આગામી ૭ ઓગસ્ટથી વૈદિક ધર્મના પ્રચારાર્થે આચાર્ય જ્ઞાનેશ્વરજી દર્શનાચાર્ય વિદેશમાં પ્રચાર યાત્રાએ જશે

યજ્ઞ એ કોઇ પણ વસ્તુને સૂક્ષ્મ કરી દે છે અને તેને કારણે તેની અસર મોટા પ્રમાણમાં થાય છે : પૂ. ઈશ્વરાનંદજી

ધર્મ એટલે કે આપણે જેવું ઈચ્છીએ તેવું જ વર્તન બીજા સાથે કરીએ : શ્રી સુરેશભાઈ થાવરા

...નવ...

...પુરૂષોત્તમ... સંપાદિત કરવ... વૈદિક ઉપદેશ... સુરેશભાઈ... અગ્નિપથના... અરવિંદભાઈ... ઉપસ્થિત રહ... સન્માન કરવા... લગભગ ૨૦૦... સહિત કુલ... વ્યક્તિઓએ અ...

બૃહતિ બ્રહ્મમેધા ગ્રંથ અર્પણ

દર્શન યોગ મહાવિદ્યાલય-આર્યવન, રોજડ દ્વારા વૈદિક સાહિત્યના પ્રકાશનના કાર્યનો પુનઃ આરંભ કરવામાં આવ્યો છે. આર્યજગતના સુપ્રસિદ્ધ દાર્શનિક સંન્યાસી યોગનિષ્ઠ પૂ. સ્વામી ... પરિવ્રાજકે ... વર્ષોના ... આધારે ... રીતે ... પવા ...

પસંદગીના વાનપ્રસ્થિઓ તથા અન્ય તીવ્ર જીજ્ઞાસુ મહાનુભાવોએ પણ આ શિબિરનો લાભ લીધો હતો.

વિદ્યાલયના વર્તમાન આચાર્ય સુમેરૂપ્રસાદજી દ્વારા આ ત્રણ માસની શિબિર દરમ્યાન પૂ. સ્વામી સત્યપતિજી દ્વારા આપવામાં આવેલ ઉપદેશોનું સંકલન કરી તેને ત્રણ ભાગમાં ગ્રંથના સ્વરૂપમાં પ્રકાશિત કરવામાં આવેલ છે. હિન્દી ભાષામાં લખાયેલ આ ગ્રંથ સમાધી સુધી પહોંચવાની ઈચ્છા ધરાવતા યોગનિષ્ઠ મહાનુભાવો માટે માર્ગદર્શક બની રહેશે એમાં કોઈ શંકા નથી. આ ગ્રંથને વિશેષ મહાનુભાવો સુધી પ્રચારાર્થે વિતરિત કરવામાં આવી રહ્યા છે.

રમત ગમતયુવક સેવા અને સાંસ્કૃતિક પ્રવૃત્તિઓન વિભાગના સચિવ શ્રી ભાગ્યેશભાઈ જહાને શ્રી અરવિંદભાઈ રાણા તથા વૈદિક મહાસભાના ગાંધીનગરના પ્રભારી શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ગાંધીના વરદ હસ્તે બૃહતિ બ્રહ્મમેધા ગ્રંથનો સેટ અર્પણ કરવામાં આવ્યો હતો.

દરરોજ સવારે સંસ્કૃત ભાષાના આઠ-દસ પાના નિયમિતરૂપે વાંચવાની ટેવ ધરાવતા સંસ્કૃતપ્રેમી શ્રી ભાગ્યેશભાઈ જહાએ કહ્યું હતું કે, જે વ્યક્તિ સંસ્કૃત ભાષા જાણે છે તે અન્ય વ્યક્તિઓ કરતાં વિશેષ સુખ, આનંદ, ઉર્જાની અનુભૂતિ કરે છે.

જેમની ચેમ્બરમાં ચારેય વેદનો સેટ શ્રદ્ધાપૂર્વક સ્થાપિત કરવામાં આવેલ છે તેવા ગાંધીનગર સમાચાર દૈનિકના તંત્રી શ્રી કૃષ્ણકાંતભાઈ જહાને શ્રી અરવિંદભાઈ રાણા તથા શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ગાંધીના હસ્તે બૃહતિ બ્રહ્મમેધા ગ્રંથનો

...દિક જ્ઞાનને લોકભોગ્ય બનાવવું ...જોઈએ : શ્રી પુરૂષોત્તમ રૂપાલા

દર્શનયોગ મહાવિદ્યાલય દ્વારા પ્રકાશિત બૃહતિ બ્રહ્મમેધા ગ્રંથ તાજેતરમાં ...જ્યસભાના સાંસદ તથા ભારતીય જનતા પાર્ટીના અગ્રણી નેતા શ્રી પુરૂષોત્તમ ...પાલાજીને વૈદિક મહાસભાના મંત્રી તથા અગ્નિપથના તંત્રી શ્રી અરવિંદભાઈ ...ણા તથા વૈદિક મહાસભા, ગાંધીનગરના પ્રભારી શ્રી મહેન્દ્રભાઈ ગાંધી ...રા અર્પણ કરવામાં આવ્યો હતો.

આ પ્રસંગે શ્રી પુરૂષોત્તમ રૂપાલાએ વૈદિક સાહિત્યને લોકભોગ્ય ...નાવવાનું સૂચન કર્યું હતું. તેમણે જણાવ્યું હતું કે જેવી રીતે શિક્ષણમાં પ્રાથમિક, ...ધ્યમિક અને કોલેજનો અભ્યાસક્રમ અમલમાં છે તેવી જ રીતે વૈદિક જ્ઞાનને ...ણ ત્રણ વિભાગમાં વહેંચી પ્રકાશિત કરવું જોઈએ. જો આમ કરવામાં આવશે ... વૈદિક વિચારધારાનો પ્રચાર-પ્રસાર વધુ સરળતાથી કરી શકાશે.

...ોરબંદરમાં સૌપ્રથમ વેદ કથા યોજનાર ...શૈલેષભાઈ ઠાકર તથા શ્રીમતી કિષ્ણાબેન ઠાકરના સપત્ર